Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :10.16(2026); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer-Peer Reviewed, Refereed & Open Access International Journal - As per UGC Norms
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:15, Issue:4(3), April 2026
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed: Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

अरविंद तिवारी की व्यंग्य रचनाओं में चिकित्सा व्यवस्था की विसंगतियाँ

डॉ. सी. चिन्न नरसिंहुडु,
एम.ए., पीएच.डी.,
अकादमिक कन्सल्टेंट
हिंदी विभाग
श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय
तिरुपति – 517 502, आंध्र प्रदेश
मोबाइल नं. 9705150738

भारत देश में आजादी प्राप्त होने के बाद निरंतर बढ़ती गयी जनसंख्या के साथ सुव्यवस्थित ढंग से शासन चलाने के लिए सरकार ने शासन संचालन के लिए कई विभागों और उपभागों का निर्माण किया है। इनमें कई सेवा विभाग हैं। जैसे पुलिस विभाग, चिकित्सा विभाग, न्याय विभाग, परिवहन और जनसंचार विभाग आदि। इन सबका दायित्व जनता को अच्छी सेवाएँ, उपलब्ध कराना है। यह दायित्व प्रत्येक विभाग के अधिकारी और कर्मचारियों का भी है। परंतु आज इन सभी सेवा विभागों में चारों ओर विषमताएँ एवं विसंगतियाँ पायी जाती है।

अन्य सेवा विभागों में चिकित्सा विभाग का काफी महत्व है। प्रत्येक नागरिक स्वास्थ्य को उपलब्ध करना डॉक्टर का धर्म है। जनता के कल्याण के लिए अस्पतालों की स्थापना हुई है। नगरों में डॉक्टरों व निजी अस्पतालों की संख्या दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है। नगरों में शरीर के प्रत्येक अंग के लिए विशेषज्ञ डॉक्टर होते हैं। आजकल अस्पतालों से भ्रष्टाचार वातावरण, डॉक्टरों, नर्सों कर्मचारियों की गैरजिम्मेदारी के कारण लोग रोग से निवारण के साथ पर नये रोगों को साथ लेकर जा रहे हैं। लोगों की सेवाओं के लिए निर्मित अस्पतालों ने जनता की सेवा के बजाए अपने अव्यवस्थित नियमों के कारण भ्रष्ट रूप धारण कर लिया है।

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :10.16(2026); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer-Peer Reviewed, Refereed & Open Access International Journal - As per UGC Norms
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:15, Issue:4(3), April 2026
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed: Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

चिकित्सा व्यवस्था के अंतर्गत विसंगतियाँ डॉक्टर, नर्स तथा अस्पताल के अन्य कर्मचारियों से संबंधित विसंगतियाँ आती हैं। इस विभाग में रोगियों को अपनी बीमारियों से बचाते है। जनता डॉक्टर को भगवान का एक और रूप मानती है क्योंकि अनेक भंयकर बीमारियों से बचानेवाले सिर्फ डॉक्टर ही होता है। लेकिन आज यह व्यवस्था भी भ्रष्ट पड गयी। सरकारी डॉक्टर सरकार में कामकाज करके पैसे कमाने के साथ-साथ प्राइवेट में भी पैसा कमा रहे हैं। कुछ ऐसे डॉक्टरों को भी देख सकते है जो सरकार से दी गयी दवाओं को जनता के लिए उपयोग न करके उसे बाहर बेचकर अपनी जेब भर रहे है। जान बचाने वाला डॉक्टर ही जान ले रहा है। कुछ अस्पतालों में स्वच्छता की कमी होता है इसमें डॉक्टरों की और अस्पताल के पूरे कर्मचारियों की लापरवाही देख सकते हैं।

यह विभाग जन कल्याण चाहता है। सरकार की नीति में जनता को रोग मुक्त रखकर उसे सुख प्रदान करने के दो उपाय हैं रोगों का रोकथाम और इलाज। पहला जनता को रोगों से मुक्त रखने के लिए रोगों के फैलने के पहले जनता में उनके प्रति चेतना जगाना, रोगों के लिए जिम्मेदार वातावरण को दूर करना, रोग फैलानेवाले कीडे-मकोडों का नष्ट करना, प्रदूषण से जनता को बचाना तथा दूसरा रोग ग्रस्त जनता को इलाज का उचित प्रबंधन करना आता है। चिकित्सा विभाग के ये दोनों कार्य अत्यंत महत्व रखते हैं। इन दोनों कार्यों के बीच में भी संबंध है। रोगों को फैलने के पहले ही रोकेंगे तो रोगों को इलाज करने की जरूरत ही नहीं होती है। परन्तु अन्य विभागों की तरह इस विभाग में भी काम करनेवाले लोगों की स्वार्थपरकता, गैरजिम्मेदारी, अकर्मण्यता, भ्रष्टाचार की वजह से जनता पीडित होती है। बल्कि बाकी विभागों की तुलना में इस विभाग में व्याप्त विसंगतियों के कारण जनता ज्यादा शिकार होती है।

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :10.16(2026); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer-Peer Reviewed, Refereed & Open Access International Journal - As per UGC Norms
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:15, Issue:4(3), April 2026
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed: Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

व्यंग्यकार अरविंद तिवारी ने अपने निबंधों में चिकित्सा व्यवस्था की विसंगतियों में डॉक्टरों की गैरजिम्मेदारी, स्वार्थपरकता, अस्पताल की कर्मचारियों की अकर्मण्यता और चिकित्सा की अव्यवस्था आदि पर व्यंग्य किया है।

चिकित्सा की व्यवस्था

आज के डॉक्टर पैसों के परम भक्त हैं। आम तौर पर प्रत्येक व्यक्ति जीवन काल में किसी-न-किसी बीमारी का शिकार होता है। जब वह रोग ग्रस्त होता है तो डॉक्टर के पास जाता है। डॉक्टर भी डिग्री लेते समय यह वादा करते हैं कि हमारी इस डिग्री को गलत चिकित्सा के लिए इस्तेमाल नहीं करेंगे। लेकिन आज के डॉक्टर पैसों से अतिशय प्रेम के कारण न जाने क्या-क्या करते हैं। आज डॉक्टर पैसों से अतिशय प्रेम के कारण मरीजों को चिकित्सा के लिए मशीनों का इस्तेमाल करते हैं। मरीज इन मशीनों को देखकर डरते हैं। अरविंद तिवारी ने अपने निबंध "इक्कीसवीं सदी की चिन्ता" में चिकित्सा के लिए मशीनों करने वाले डॉक्टरों पर व्यंग्य किया है। मैं पात्र के द्वारा कहलवाया है - "अब गंभीर मुद्रा वाले एक मात्र व्यक्ति पं. भस्मीलाल वैद्य जी रह गये। मैं ने उनकी पीठ ठोंकते हुए कहा कि आप अपनी निराश को मतपेटी में मत पत्र की शांति फेंक दीजिये। इक्कीसवीं सदी में प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों पर रोगों के निदान एवं चिकित्सा की इतनी भारी भरकम मशीनें लग जायेंगी कि आम मरीज डरकर भाग जायेगा। प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र कपड़ा मिल की तरह दिखायी देगा। छोटी डिस्पेंसरी फैक्ट्री में बदल जायेगी। रोगी इन मशीनों की दशहत से डरकर आपके पास ही तो आयेंगे। उनको मशीनों के विरुद्ध और भड़काना तथा हिंग्वाष्टिक चूर्ण की पुड़िया दे देना। काजल जलाकर राख एकत्रित करके लौह भस्म का लेबल लगा देना।"[1]

डॉक्टरों की स्वार्थपरकता

आज के डॉक्टर व्यापारी बने हैं। मरीज की चिंता वे नहीं करते हैं। आजकल अस्पतालों का प्रशासन इतना भ्रष्ट हो चुका है कि इसके अव्यस्थित नियमों की वजह

से जनता को डॉक्टरों से कई परेशानियों का सामना करना पड़ता है। जहाँ भी रहे उनका धंधा दिन - दूनी रात - चुगौनी से चलती है। आज के अस्पतालों के प्रशासन ने अपने अव्यवस्थित नियमों के कारण भ्रष्ट रूप धारण कर लिया है। आजकल डॉक्टरों को मेडिकल स्टोर से पेथोलॉजी के उपक्रम तक साझा रहते हैं। डॉक्टर मेडिकल स्टोर से पैसा एंटने के लिए पार्टनर रखते हैं। अरविंद तिवारी ने अपने निबंध "सरकारी अस्पताल और गणित के सवाल" में मेडिकल स्टोर से पेथोलॉजी के उपक्रम तक डॉक्टरों का सांठ गांठ रहने पर व्यंग्य किया है। "मैं" मात्र के द्वारा कहलवाया है - "साझे के प्रश्न सरकारी अस्पतालों में बहुत मिल जाते हैं। मेडिकल स्टोर से लेकर पेथोलॉजी के प्राइवेट उपक्रम तक में डॉक्टारों का साझा रहता है। प्रश्न इस प्रकार हो सकता है - डॉक्टर और उसके पार्टनर ने क्रमशः एक लाख और दो लाख रूपए लगाकर मेडिकल स्टोर खोला। लाभ का दस प्रतिशत डॉक्टर को नुस्खा लिखने के लिये तय हुआ। वर्ष के अंत में यदि कुल लाभ एक लाख रूपया हुआ तो डॉक्टर को कितना मिला?"[2] स्पष्ट है कि आजकल डॉक्टरों की स्वार्थपरकता की कोई सीमा नहीं है।

डॉक्टरों की गैरजिम्मेदारी

आज के डॉक्टर व नर्स इतने गैरजिम्मेदार हैं कि मरीज का इलाज करना छोड़कर वे अपने निजी कामों में व्यस्त रहते हैं। अस्पताल में मरीज को वक्त पर न खाना दिया जाता है, न दवा दी जाती है और न ही इलाज किया जाता है डॉक्टरों की लापरवाही से मरीज मर जाते हैं। लापरवाही से ऑपरेशन करने से, गलत दवाई देने से मरीज मर जाते हैं। फिर भी डॉक्टर अपनी जिम्मेदारी का अनुभव नहीं करते हैं। अरविंद तिवारी ने अपने निबंध "सरकारी अस्पताल और गणित के सवाल" में डाक्टरों की ऐसी लापरवाही पर व्यंग्य किया है। व्यंग्यकार ने - "मैं पात्र के द्वारा कहलवाया है" प्रतिशत के जितने सवाल सरकारी अस्पताल में बन सकते हैं, उतने जीवन के किसी भी क्षेत्र में नहीं बन सकते। उदाहरण के लिए किसी अस्पताल में प्रति माह

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :10.16(2026); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer-Peer Reviewed, Refereed & Open Access International Journal - As per UGC Norms
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:15, Issue:4(3), April 2026
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed: Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

साठ प्रतिशत मरीज मर जाते हैं, जिनमें चालीस प्रतिशत बीमारी से शेष डॉक्टरों की लापरवाही से यदी भर्ती हुए मरीज पांच सौ हो, तो बताओं डॉक्टरों की लापरवाही से कितने मरीज मर गये। दूसरा सवाल लें। किसी सरकारी अस्पताल में नसबन्दी के आंकडो में से साठ प्रतिशत आंकडे फर्जी है। यदि उस वर्ष एक हजार ऑपरेशन हुए हो, तो वास्तविक ऑपरेशन कितने हुए। एक अस्पताल में सरकार द्वारा प्राप्त दवाइयों में से पचास प्रतिशत डॉक्टरों के यहाँ शेष की बीस प्रतिशत काम्पाउण्डरों के यहाँ और शेष मरीजों को मिलती है। बताओं मरीजों को कुल कितने प्रतिशत दवाइयां मिलती है। सन् उन्नीस सौ सत्तर में पट्टी को कुल कितने प्रतिशत दवाइयां मिलती हैं। सन् उन्नीस सौ सत्तर में पट्टी की चौडाई दस सेमी थी। सन् अस्सी में पांच और नब्बे में तीन सेमी रह गई। बताओं सन् दो हजार तक कितनी रह जाएगी। क्या पट्टी की जगह पतली डोरी बांधी जाएगी?"[3] स्पष्ट है कि आजकल डॉक्टरों की गैरजिम्मेदारी के कारण मरीज मर जाने की पूरी संभावना है।

अस्पताल कर्मचारियों की अकर्मण्यता

अकर्मण्यता का अर्थ - काम नहीं करना । साधारणतया काम को टालना, अकर्मण्यता कहलाती है। खासकर आज अस्पताल कर्मचारी काम नहीं कर रहे हैं। आज के डॉक्टर स्वार्थी हैं पैसा कमाने के लिए निजी काम करने में वे व्यस्त हैं। सरकारी अस्पताल में कर्मचारियों गैरहाजिर होकर अपना निजी काम करते हैं। सरकारी अस्पताल के कर्मचारी सफाई का काम टालते हैं। अस्पताल में ठीक से टेस्ट भी नहीं करते हैं। अरविंद तिवारी ने अपने निबंध "सरकारी अस्पताल और गणित के सवाल" में सरकारी अस्पताल के कर्मचारियों के गैरहाजिर होकर काम न करने वाली प्रवृत्ति पर व्यंग्य प्रस्तुत करते हुए "मैं" पात्र के द्वारा कहलवाया है - "समय और काम के प्रश्न अस्पताल में भरे पड़े हैं। बैडशीट एक माह में तैलिया बन जाती है। बताओ रूमाल बनने में कितना समय लगेगा। सफाई कर्मचारी एक सप्ताह में एक कमरा साफ करता है, बताओं पूरा अस्पताल साफ करने में उसे कितना समय लगेगा। एक मरीज का

Cover Page
INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :10.16(2026); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer-Peer Reviewed, Refereed & Open Access International Journal - As per UGC Norms
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:15, Issue:4(3), April 2026
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed: Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

खून टेस्ट करने में पेथालॉजिस्ट तीन दिन का समय लेता है, बताओं बीस मरीजों की जांच में कितना समय लगेगा।"[4] स्पष्ट है कि आजकल अस्पताल के कर्मचारी काम को टालते हैं।

आज चिकित्सा व्यवस्था की स्थिति अस्त-व्यस्त हो गई। आज के नर्स से लेकर डॉक्टर तक सभी लोगों को पैसों की बीमारी लग गयी हैं। व्यंग्यकार अरविंद तिवारी ने चिकित्सा व्यवस्था की कम खींचाई की है। डॉक्टर तथा नर्स आदि अस्पताल के कर्मचारी मरीजों को जीवनदान देने की जगह अपने स्वार्थ में पड़कर उनके जीवन प्राण छीन रहे हैं। डॉक्टर अधिक फीस वसूल करता है। फीस वसूल करने के लिए ही इलाज करता है। धन के पीछे दौड़नेवाले डॉक्टरों गैरजिम्मेदारी अधिक है। चिकित्सा व्यवस्था की विसंगतियों में चिकित्सा की अव्यवस्था, डॉक्टर की स्वार्थमरकता, डॉक्टरों की गैरजिम्मेदारी और अस्पताल कर्मचारियों की अकर्मण्यता आदि अरविंद तिवारी ने अपने व्यंग्य रचनाओं में फर्दाफाश किया है।

आज चिकित्सा विभाग में भ्रष्टाचार एक भूत की तरह सवार हो गया है। इसे दूर करने के लिए आनेवाले लोग भी कई बार इसके चुंगल में फँस जाते हैं और इससे बच नहीं पाते। चिकित्सा विभाग में व्याप्त भ्रष्टाचार और इससे उसका संबंधित व्यवस्थाओं के प्रति अपनी व्यंग्य रचनाओं में अरविंद तिवारी ने कडी आपत्ति प्रकट की है। कुल मिलाकर चिकित्सा विभाग में फैली विभिन्न विसंगतियों पर व्यंग्य करते हुए अरविंद तिवारी ने बडी सफलता के साथ विसंगतिबोध जगाया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. दीवार पर लोकतंत्र - अरविंद तिवारी, पृ.सं. 115.
2. मानवीय मंत्रालय - अरविंद तिवारी, पृ.सं. 11.
3. मानवीय मंत्रालय - अरविंद तिवारी, पृ.सं. 11.
4. नल से निकला सांप - अरविंद तिवारी, पृ.सं. 10.